IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दिल्ली सल्तनत के समय उत्तराखंड में शिक्षा पर प्रभाव

शोध निर्देशक
डॉ0 मुकेश कुमार
मोनाड विश्वविद्यालय
हापुड़, उ0प्र0

शोधार्थी
बिरेन्द्र अधिकारी इतिहास विभाग
मोनाड विश्वविद्यालय हापुड़, उ0प्र0

सार

इस पेपर में शोधकर्ता मध्यकाल के दौरान भारत में शिक्षा के विकास पर ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं। मध्यकाल में शिक्षा व्यवस्था मुस्लिम व्यवस्था से प्रभावित थी। इस अवधि के दौरान, शिक्षा प्रणाली में विभिन्न परिवर्तन हुए। व्यक्तियों को शिक्षा के महत्व का एहसास होने लगा। उन्होंने उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिला लेना भी शुरू कर दिया। शिक्षा व्यवस्था को दो भागों में विभाजित किया गया। प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा। प्राथमिक शिक्षा मकतबों में और उच्च शिक्षा मदरसों में दी जाती थी। शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में आधुनिक और नवीन तरीकों और रणनीतियों की शुरुआत हुई।

परिचय

दिल्ली सल्तनत के समय 1206–1526 ई0 तक उत्तराखंड क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में स्थित था। इस समय के इतिहास में उत्तराखंड का क्षेत्र समृद्ध संस्कृति और सांस्कृतिक धरोहर का साक्षात्कार करता है। इस समय के दौरान, शिक्षा उत्तराखंड के समाज, संस्कृति और आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव डालती थी। दिल्ली सल्तनत शासकों ने उत्तराखंड क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित की और कई शहर और कस्बों को विकसित किया। इस समय के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में मदरसों की स्थापना हुई जिनसे संस्कृत, अरबी, फारसी, उर्दू, तुर्की और अन्य भाषाओं की शिक्षा दी जाती थी। उत्तराखंड में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए, दिल्ली सल्तनत के शासक शिक्षा के क्षेत्र में अनेक विद्वानों और शिक्षाविदों को समर्थित करते थे। वे संस्कृत और अरबी भाषा के विद्वानों को अपने दरबार में नियुक्त करते थे जो छात्रों को शिक्षा प्रदान करते थे। इसके अलावा, दिल्ली सल्तनत के समय में उत्तराखंड में रसायन, गणित, ज्योतिष, विज्ञान और विद्या के अन्य क्षेत्रों में भी शिक्षा के लिए कार्यक्रमों की विकसिति की गई। इस अध्ययन में, हम दिल्ली सल्तनत के समय में उत्तराखंड के शिक्षा पर उसके विभिन्न पहलुओं और प्रभाव को विस्तार से जांचने का प्रयास करेंगे। इसके जरिए हम उत्तराखंड के शिक्षा इतिहास में दिल्ली सल्तनत के युग के योगदान को अध्ययन करेंगे और शिक्षा के इस परिवर्तनकारी दौर की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने का प्रयास करेंगे। मध्यकालीन भारत का काल लगभग 10वीं शताब्दी ई. से लेकर 18वीं शताब्दी के मध्य तक, अर्थात् ब्रिटिश शासन से पहले का है। इस प्रणाली के दौरान, मुस्लिम शिक्षा प्रणाली प्रमुख थी। महमूद गजनवी ने देश पर आक्रमण किया और लूटे गए धन से अपने देश में बड़ी संख्या में विद्यालय और पुस्तकालय स्थापित किए। बाद में

जब मुस्लिम शासकों ने भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित किया, तो उन्होंने शिक्षा की एक नई प्रणाली शुरू की। परिणामस्वरूप, शिक्षा की प्राचीन प्रणाली में बहुत बदलाव आया। वस्तुतः मुस्लिम काल की शिक्षा हिन्दू काल की तुलना में बहुत घटिया थी। अकबर को छोड़कर किसी भी मुस्लिम शासक ने शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य नहीं किये। मध्यकालीन भारत में शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र था जो काफी हद तक कुछ लोगों तक ही सीमित था, जो ट्रांसमिशन के प्रबंधन में शामिल थे, यह तकनीकी रूप से कुछ ऐसा था जो हर किसी की पहुंच के भीतर था। मोहम्मदवाद का उदय दुनिया के इतिहास की सबसे उल्लेखनीय घटनाओं में से एक है। मोहम्मदवाद के उदय के साथ भारत के संपूर्ण इतिहास में परिवर्तन आया। भारत में मुसलमानों के आक्रमण आठवीं शताब्दी ई. की शुरुआत में हुए। अरबों और तुर्कों ने देश के भीतर अधिकांश नए रीति–रिवाजों, संस्कृतियों और संस्थानों को पेश किया। इनमें से सबसे उल्लेखनीय शिक्षा का इस्लामी पैटर्न था, जो बौद्ध और ब्राह्मणवादी प्रणालियों से काफी हद तक अलग था।

प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षा व्यवस्था में जो परिवर्तन आये हैं, वे इस बात का द्योतक है कि सामाजिक सन्दर्भों में भी परिवर्तन एवं बदलाव आये हैं। मध्यकालीन भारत में शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से इस्लामी और मुगल प्रणाली पर केन्द्रित थी। नई सामाजिक वास्तविकताओं, विशेष रूप से शिक्षा के लोकतंत्रीकरण, ज्ञान समाज के उद्भव और वैश्वीकरण के बीच परस्पर क्रिया का सभी समाजों की शैक्षिक प्रक्रियाओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा। सभी चुनौतियों और समस्याओं से निपटने का प्रयास करते समय, देश ने शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय आयाम को भी ध्यान में रखा। राष्ट्रीय आवश्यकताओं और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की अपेक्षाओं में परस्पर विरोधी हित प्रतीत हो सकते हैं, लेकिन देश के भीतर परिवर्तन की ग्रहणशीलता ने उनकी संपूरकता को जन्म दिया है। बदलती परिस्थितियों के विश्लेषण से पता चलता है कि इनमें से अधिकांश बदलाव अगले कुछ दशकों की शैक्षिक नीतियों के माध्यम से होने की संभावना है।

मध्यकालीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य

मुस्लिम काल में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के पीछे प्राथमिक उद्देश्य इस्लाम का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ ज्ञान का विस्तार करना था। मध्यकालीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1- ज्ञान का विस्तार करना और इस्लाम का प्रचार करना।

2- इस्लामी सिद्धांतों, कानूनों और सामाजिक सम्मेलनों का प्रचार करना।

3- व्यक्तियों को धार्मिक विचारधारा वाला बनाना।

4- मुस्लिम शिक्षा का उद्देश्य भौतिक संपदा और समृद्धि प्राप्त करना था

शैक्षिक संगठन–

स्कूली शिक्षा प्रदान करने वाली संस्थाओं को मकतब कहा जाता था। जबकि, वे संस्थाएँ जो उच्च शिक्षा का प्रावधान करती थीं, मदरसों के नाम से जानी जाती थीं। मकतब आम तौर पर जनता के दान से चलते थे, जबकि मदरसों का रखरखाव शासकों और अमीरों द्वारा किया जाता था। छह अलग–अलग प्रकार की संस्थाएं थीं, इनमें शामिल हैं, वे जो शासकों और अमीरों द्वारा बनाए गए थे, वे जो व्यक्तिगत विद्वानों द्वारा राज्य या दान से प्राप्त सहायता और समर्थन से शुरू किए गए थे, वे जो मस्जिदों से जुड़े थे, वे जो कब्रों से जुड़े थे, वे जो व्यक्तिगत विद्वानों द्वारा शुरू किए गए थे और वे जो सूफी धर्मशालाओं से जुड़े थे। प्रसिद्ध मदरसे दिल्ली में मुइजी, नासिरी

और फिरोजी मदरसे, बीदर में मोहम्मद गवानी का मदरसा और फतेहपुर सीकरी में अबुल फजल का मदरसा था। सीरत–ए–फिगुजशाही 14 विषयों की एक सूची प्रदान करती है जो मदरसों में न्यायशास्त्र या दिरात जैसे पढ़ाए जाते थे। यह कुरान पाठ के पाठ, विराम चिह्न, गायन आदि की विधि थी।

इस दौरान महिलाओं को बिना चेहरा ढके बाहरी लोगों के सामने जाने की इजाजत नहीं थी। इसे पर्दा प्रथा के नाम से जाना जाता था। पर्दा प्रथा के प्रचलन के कारण महिलाओं में शिक्षा को मान्यता नहीं दी गई। हिंदू धर्म विद्यालयों की उपस्थिति जहां संस्कृ त शिक्षा का माध्यम थी और मुस्लिम धर्म के मकतब जहां फारसी शिक्षा का माध्यम थी, के कारण एक नई भाषा, उर्दू का निर्माण हुआ। यह आम तौर पर अरबी और फारसी मूल के शब्दों के साथ फारसी अक्षरों में लिखा जाता था। व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा की उत्पत्ति को मुस्लिम काल के अंतर्गत प्रमुख विकास माना जाता था। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद से, इस्लामी शासकों ने केंद्रीय प्रशासन के साथ एक साम्राज्य का निर्माण किया।

शिक्षा की विशेषताएँ– मध्यकाल के दौरान शिक्षा की विशेषताओं का वर्णन नीचे किया गया है–

शासकों का संरक्षण– शासकों ने शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों की शुरुआत की और वित्तीय संसाधन भी निहित किये।

राज्य द्वारा नियंत्रण की अनुपस्थिति– शैक्षणिक संस्थानों के नियंत्रण और कामकाज में राज्य की कोई भागीदारी नहीं थी। शासकों ने न तो किसी अधिकार का दावा किया, न ही शैक्षणिक संस्थानों के प्रबंधन और प्रशासन में भाग लिया।

धर्म का महत्व– शिक्षा व्यवस्था में धार्मिक शिक्षा का अत्यधिक महत्व माना जाता था। शिक्षा प्रणाली के लक्ष्य, उद्देश्य, सामग्री तथा अन्य पहलू धर्म पर आधारित थे।

व्यावसायिक शिक्षा का महत्व– व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को काफी हद तक पहचाना गया। व्यक्तियों का दृष्टिकोण था कि वे व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करके अपनी जीवन स्थितियों को पर्याप्त रूप से बनाए रखने में सक्षम होंगे।

शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंध– शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंधों को शिष्टाचार, दयालुता, शालीनता और मिलनसारता के लक्षणों के कार्यान्वयन के माध्यम से पहचाना गया। शिक्षक किसी बात पर अपनी सहमति दें या न दें, छात्रों को उनके निर्णयों को मानना और स्वीकार करना आवश्यक था।

व्यक्तिगत ध्यान – शिक्षा प्रणाली का एक बड़ा फायदा यह था कि कक्षा के भीतर छात्रों की संख्या सीमित थी। इसलिए, शिक्षक छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान देने में सक्षम थे। इस तरह, छात्र अच्छे शैक्षणिक परिणाम प्राप्त करने में सक्षम थे और अपनी समस्याओं को हल करने में सक्षम थे।

विशेषज्ञ शिक्षक– इस अवधि के दौरान शिक्षक अच्छी तरह से शिक्षित थे और पूरे दिल से नौकरी कर्तव्यों के प्रदर्शन के प्रति समर्पित थे। शिक्षकों को काफी हद तक स्वीकार किया गया और उनका सम्मान किया गया। यह माना जाता था कि शिक्षक ही हैं, जो सुशिक्षित और सुव्यवस्थित शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं और विद्वान पैदा कर सकते हैं। अनुशासन– शैक्षणिक संस्थानों के साथ–साथ सदस्य, यानी शिक्षक और छात्र अनुशासित थे। यदि छात्र नियमों और नीतियों का पालन नहीं करते थे तो उन्हें दंडित किया जाता था। सीखने से संबंधित सभी कार्यों और गतिविधियों में शामिल होने के अलावा, अनुशासन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था।

शिक्षण सहायता– कक्षाओं के भीतर छात्रों की संख्या कम थी, और शिक्षकों द्वारा आसानी से प्रबंधित किया जा सकता था। लेकिन कुछ मामलों में, शिक्षकों को अपने कनिष्ठ या वरिष्ठ शिक्षकों की मदद की जरूरत होती है, अगर उन्हें लगता है कि शिक्षण विधियों को केवल अभ्यास में नहीं लाया जा सकता है और संयुक्त शिक्षण और सहयोग फायदेमंद होगा।

इस्लामी शिक्षा प्रणाली– मध्यकाल में, इस्लामी शिक्षा प्रणाली ने वैदिक शिक्षा प्रणाली और बौद्ध शिक्षा प्रणाली का स्थान ले लिया। कारण, यह महसूस किया गया कि इस्लामी प्रशासन की बढ़ती आवश्यकता थी। इस्लामी शिक्षा प्रणाली की शुरुआत दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ हुई थी। इस्लाम शिक्षा को बहुत महत्व देता है, जो ज्ञान सिखाने, प्राप्त करने या सीखने की प्रक्रिया है। इस्लाम धर्म में शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति की उन्नति और उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जिससे वह अपना भविष्य सुरक्षित करने और कुशल जीवन जीने में सफल हो सके। मध्ययुगीन भारत में शिक्षा की प्रणाली बगदाद के अब्बासिड्स के तहत विकसित की गई शिक्षा की परंपरा की तर्ज पर बनाई गई थी। समरकंद, बुखारा और ईरान जैसे देशों के विद्वान मार्गदर्शन के लिए भारतीय विद्वानों की ओर देखते थे। भारतीय उपमहाद्वीप के विद्वान अमीर खुसरो ने न केवल लेखन, गद्य और पद्य का कौशल विकसित किया, बल्कि

स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल एक नई भाषा भी तैयार की। कुछ समकालीन विद्वानों, जैसे मिन्हाज–उस–सिराज, जियाउद्दीन बरनी और अफीफ ने भारतीय विद्वता के बारे में लिखा है। इस अवधि में, कई विषयों का परिचय हुआ, इनमें तर्कशास्त्र, गणित, ज्यामिति, इतिहास, भूगोल, लेखाशास्त्र, लोक प्रशासन, साहित्य, विज्ञान और खगोल विज्ञान शामिल हैं। इनके अलावा, शिक्षा प्रणाली में विभिन्न रणनीतियों और विधियों का भी परिचय हुआ, इनमें पढ़ना, लिखना, चर्चा करना, तार्किक तर्क, अनुसंधान और प्रयोग शामिल हैं। मुसलमान सामान्य शिक्षा को इस्लामी शिक्षा का अभिन्न अंग मानते थे। उन्होंने प्राचीन बौद्ध और हिंदू मंदिरों और स्कूलों और अन्य शैक्षणिक कों को ध्वस्त कर दिया और मस्जिदों और मदरसों का निर्माण किया। मुस्लिम काल में शिक्षा को उच्च सम्मान दिया जाता था। महान मुगल सम्राट विद्या के संरक्षक और शिक्षा के प्रवर्तक थे। जो लोग सुशिक्षित और विद्वान थे, उनका पूरे देश में आदर और सम्मान किया जाता था। वकील, न्यायाधीश, शिक्षक, शोधकर्ता, शिक्षाविद्, सेना के कमांडर और मत्रं ी, सभी शिक्षित वर्ग के थे। मुस्लिम शिक्षा प्रणाली ने ऐसी रणनीतियों और दृष्टिकोणों को लागू करना शुरू कर दिया कि हिंदू भी इसे स्वीकार करने लगे। इस शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों को अपने जीवन को बनाए रखने और चुनौतियों और समस्याओं से निपटने के लिए पर्याप्त रूप से तैयार करना था। मुस्लिम शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषता यह थी कि यह आत्मा में पारंपरिक और
सामग्री में धार्मिक थी। पाठ्यक्रम को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया थारू पारंपरिक (मैनकुलैट) और तर्कसंगत (मैकुलैट) विज्ञान। पारंपरिक विज्ञान के अंतर्गत, जिन विषयों को पेश किया गया उनमें कानून, इतिहास और साहित्य शामिल थे। तार्किक विज्ञान के अंतर्गत तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, गणित तथा खगोलशास्त्र आते थे। पारंपरिक विज्ञान की तुलना में बाद के चरण में तर्कसंगत विज्ञान पर अधिक जोर दिया गया। इल्तुतमिश के शासनकाल में, जो 1211–1236 से लेकर सिकंदर लोदी के शासनकाल 1489–1517 तक था, शिक्षा में पारंपरिक विषयों का बोलबाला था। जब पाठ्यक्रम प्रणाली में तर्क और दर्शन को शामिल किया जाने लगा, तो शिक्षा प्रणाली में बदलाव आना शुरू हुआ।

मुगलों के अधीन शिक्षा प्रणाली मुगल काल ने शिक्षा प्रणाली में योगदान दिया। इस अवधि के दौरान, मुगल सम्राटों ने सीखने की जबरदस्त समझ हासिल की और शिक्षा के महत्व को काफी हद तक पहचाना। पाठशालाएँ, विद्यापीठ, मकतब और मदरसे ऐसी संस्थाएँ थीं, जिनके माध्यम से जनता के बीच शिक्षा और शिक्षा का प्रसार किया जाता था। मुगल सम्राट अकबर ने शैक्षणिक संस्थानों को अनुदान दिया और जामा मस्जिद के पास

एक कॉलेज की स्थापना की। इस समय शिक्षा राज्य का विषय नहीं था। प्रारंभिक शिक्षा मंदिरों और मस्जिदों में प्रदान की जाती थी। शिक्षा के प्रावधान के संदर्भ में मंदिरों और मस्जिदों का कामकाज शासकों, धनी व्यक्तियों और दानदाताओं द्वारा दिए गए दान पर निर्भर था। मंदिरों और मस्जिदों में सस्ं कृत और फारसी भी पढ़ाई जाती थी। मुख्य नुकसानदेह क्षेत्रों में से एक यह है कि महिलाएं आमतौर पर शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रहती थीं। शाही और धनी परिवारों की महिलाएँ घर पर ही शिक्षा प्राप्त करती
थीं।

मुगल शासकों ने शिक्षा और साहित्य में रुचि दिखाई। इस काल में उर्दू भाषा का प्रचलन था। यह भाषा फारसी और हिंदी, यानी तुर्क और भारतीयों के बीच दीर्घकालिक संपर्क से शुरू हुई थी। मुगल बादशाह हुमायूँ ने दिल्ली के मदरसों में गणित, खगोल विज्ञान और भूगोल का अध्ययन शुरू किया। इससे मौजूदा शिक्षा प्रणाली में पूर्वाग्रह को कम करने में मदद मिली। अधिकांश भारतीयों ने फारसी सीखना शुरू कर दिया और संस्कृति से फारसी में अनुवाद किए गए। लेखांकन, लोक प्रशासन और ज्यामिति जैसे विषयों को सम्राट अकबर द्वारा जोड़ा गया था और उन्होंने अपने महल के पास एक कार्यशाला की स्थापना की। कार्यशाला के अंदर होने वाली सभी गतिविधियों का प्रबंधन सम्राट अकबर द्वारा किया जाता था। शिक्षा की वैज्ञानिक और धर्मनिरपेक्ष प्रणाली शुरू करने के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयास की समाज के रूढ़िवादी वर्गों द्वारा अधिक सराहना नहीं की गई।

व्यावसायिक शिक्षा मुस्लिम काल में व्यावसायिक, तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा का प्रावधान था। व्यक्तियों ने अपने कौशल, क्षमताओं और रुचियों के आधार पर शिक्षा प्राप्त करना शुरू कर दिया। इस अवधि के दौरान, व्यक्ति कई व्यवसायों में लगे हुए थे, इनमें रेशम बुनाई, बढ़ईगीरी के बर्तन बनाना शामिल थे।

रंगाई, कलाकृतियाँ, हस्तशिल्प, धातुओं, कीमती पत्थरों के साथ काम करना, कपड़ों, आभूषणों आदि का उत्पादन। मुगल सम्राटों ने कलाकृतियों और हस्तशिल्प में गहरी रुचि ली। मुगल चित्रकला वर्तमान अस्तित्व में भी प्रसिद्ध है। भारत के बढ़िया कपड़े, शॉल, चित्रित बर्तन और सोने और चांदी के आभूषण पेशेवर, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के परिणाम थे। जो व्यक्ति इन वस्तुओं के विनिर्माण और उत्पादन में लगे हुए हैं, उनके पास पर्याप्त ज्ञान और कौशल होना आवश्यक है। उत्पादकता उत्पन्न करने के लिए मशीनों और उपकरणों का उपयोग कैसे करें, इसके बारे में उनमें पर्याप्त जागरूकता होनी चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा का प्रारम्भ धार्मिक अनुष्ठान के प्रारम्भ से होता था।

शैक्षणिक संस्थान– मध्ययुगीन काल के दौरान प्रचलित शैक्षणिक संस्थानों ने शिक्षा प्रणाली को इस तरह से व्यवस्थित किया कि इससे डॉक्टर, वकील, शोधकर्ता, शिक्षाविद्, शिक्षक आदि जैसे पेशेवर पैदा हुए। पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों और शिक्षण–सीखने की प्रक्रियाओं को उचित तरीके से चलाया गया। मध्ययुगीन भारत में शैक्षणिक संस्थान और शिक्षा का संगठन संस्थानों में हुआ, जिन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है– मकतब

मकतबों में सामान्य समूह के बच्चों को शिक्षा प्रदान की जाती थी। मकतबों में जिस प्रकार की शिक्षा पर ध्यान केन्ति किया जाता था वह प्राथमिक शिक्षा थी। छात्रों को धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ पढ़ना, लिखना और अंकगणित भी सिखाया जाता था। इसलिए, यह कहा जा सकता है, बुनियादी साक्षरता कौशल पर ध्यान केन्द्रित किया गया था। बुनियादी साक्षरता कौशल के अलावा, छात्रों को धार्मिक शिक्षा के संबंध में भी ज्ञान प्रदान किया गया। मदरसा

मकतब में शिक्षा पूरी होने के बाद, व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए मदरसों में चले जाते थे। मुस्लिम काल में मदरसे उच्च शिक्षा के थे। मदरसे में लोगों को धार्मिक शिक्षा के अलावा व्यवहारिक रूप से तैयार करने के लिए अन्य क्षेत्रों की भी ट्रेनिंग दी जाती थी। सभी विद्यार्थियों को इस्लामी धर्म अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाता

था। मुगल बादशाह अकबर ने इस परंपरा पर रोक लगा दी। उन्होंने कई मदरसों में हिंदू धर्म और दर्शन की शिक्षा दी। मदरसों में जो विषय शुरू किए गए उनमें चिकित्सा, गणित, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, दर्शनशास्त्र, ज्योतिष और कानून शामिल थे। विधि मकतबों में, शिक्षण मुख्य रूप से होता था, जिसमें मौखिक तरीकों का उपयोग किया जाता था और निर्धारित पाठ को याद किया जाता था। बादशाह अकबर ने लेखन को प्रोत्साहित किया और लिपियों में सुधार लाने का प्रयास किया। शिक्षा की संरचना में सम्राट द्वारा व्यवस्थितकरण लाने का प्रयास किया गया है। विद्यार्थियों की शिक्षा का प्रारम्भ अक्षर ज्ञान से हुआ, फिर उन्होंने शब्द ज्ञान प्राप्त करना प्रारम्भ किया और फिर वाक्य बनाना प्रारम्भ किया। शैक्षणिक संस्थानों में, छात्रों और शिक्षकों को नियमों और विनियमों का पालन करना और अनुशासन बनाए रखना था। उन्हें अपने शिक्षकों द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करना था और बदले में शिक्षक भी छात्रों के साथ दयालुता और शिष्टाचार से पेश आते थे। शिक्षकों और छात्रों को एक–दूसरे के साथ सहयोग और

एकीकरण में काम करना था। जिस शिक्षा को प्रमुख माना जाता था वह व्यावहारिक शिक्षा थी। छात्रों को कोई वार्षिक या अर्ध–वार्षिक परीक्षा देने की आवश्यकता नहीं थी। इनका परीक्षण आमतौर पर समय–समय पर जीवन की व्यावहारिक स्थितियों के आधार पर किया जाता था। सैन्य प्रशिक्षण, कलाकृतियाँ और हस्तशिल्प ऐसे विषय क्षेत्र थे जिन्हें अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता था। महिलाओं को आमतौर पर शिक्षा प्राप्त करने से हतोत्साहित किया जाता था। जो महिलाएँ धनी और शाही परिवारों से थीं, वे अपने घरों में ही शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम थीं। लेकिन मकतबों और मदरसों में लड़कियों और महिलाओं को भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। दूसरे शब्दों में, महिलाओं के बीच शिक्षा के प्रसार को महत्व मिलना शुरू हो गया।

निष्कर्ष मध्यकालीन भारत में शिक्षा मुख्यतः मुस्लिम शिक्षा प्रणाली पर आधारित थी। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक शिक्षा, ज्ञान का विस्तार और इस्लाम के प्रचार–प्रसार पर केन्द्रित था। शिक्षा की विशेषताएँ हैं, शासकों का संरक्षण, राज्य नियंत्रण का अभाव, धर्म का महत्व, व्यावसायिक शिक्षा का महत्व, मानदंडों और नियमों का पालन, शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंध, व्यक्तिगत ध्यान, शिक्षित शिक्षक, अनुशासन और शिक्षण सहायता। इसे ऐसे समझा जा सकता है कि मध्यकालीन भारत में शिक्षा व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए। शिक्षा व्यवस्था सभी प्रतिबंधों से मुक्त थी। महिलाओं और लड़कियों के लिए बहुत सम्मान था, लेकिन समुदाय से संबंधित लड़कियों के बीच शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कोई संतोषजनक प्रावधान नहीं किए गए थे। शिक्षा केवल उच्च और धनी परिवारों की महिलाओं तक ही सीमित थी। इन परिवर्तनों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के महत्व के संदर्भ में व्यक्तियों में जागरूकता पैदा करना था। न केवल धनी समुदायों से संबंधित व्यक्तियों को, बल्कि विभिन्न श्रेणियों और पृष्ठभूमियों से संबंधित सभी व्यक्तियों को शिक्षा तक पहुंच प्राप्त करनी चाहिए। धीरे–धीरे, नीतियों और रणनीतियों की शुरूआत के कारण शिक्षा प्रणाली अधिक व्यवस्थित हो गई।

सन्दर्भ

1- चां, सतीश (2007), मध्यकालीन भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैक स्वान, दिल्ली।

2- चौरसिया, आर.एस. (2001), मध्यकालीन भारत का इतिहासरू 1000 ई. से 1707 तक, अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

3- फारूकी, एस.ए. (2011), मध्यकालीन भारत का एक व्यापक इतिहास, पियर्सन, दिल्ली।

4- खन्ना, एम (2007), मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, सामाजिक विज्ञान प्रेस, नई दिल्ली।

5- रॉलिन्सन, एच.जी. (2001), भारत का प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली